21 / 11 / 81की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

छोड़ो तो छूटो की युक्ति से नंम्बरवन

में जाने का अनुभव

➢➢ मै आत्मा रूहानी रमणीक फरिश्ता हूँ

➳ _ ➳ मै आत्मा लाइट के कार्ब में हूँ

→ मैं वतन की तरफ उड़ती जा रही हूँ

→ वहां के सुंदर रमणीक दृश्य देखती हूँ

→ वहा मुझ आत्माने अलौकिक अर्थ सहित

→ वृक्ष ईमर्ज होते हुए देखा

◆ वृक्ष बड़ा सुन्दर हैं

➳ _ ➳ रंग बेरंगी सुंदर पंछी अपनी अपनी डाली पर बैठे हैं

→ मै आत्मा उड़ते उड़ते बाबा की

→ श्रीमत रुपी उंगली पर बैठ खेल रही हूँ

→ ओर मेरे साथी बाबा के कंधे पर बैठी हुई हूँ

→ कई साथी बाबा के आगे पीछे चक्कर काट रहे हैं

◆ ब्रह्मा बाप उन पंछियों को

◆ मीठी आवाज़ से बुला रहे हैं

→ आओ बच्चे आओ

→ उड़ने के उनके पास पंख भी हैं

→ अपने पंख हीला भी रहे हैं

➳ _ ➳ पर अपने ही पाँवो से डाली को ऐसा मजबूत पकड़े हुए हैं

➳ _ ➳ जो उड़कर समीप नहीं आ सकते हैं

→ चाहते हुए भी उड़ नहीं रहे हैं

→ छुड़ाओ छुड़ाओ पुकारते हैं

◆ श्रीमत कहती हैं "छोड़ो तो छूटो"

➳ _ ➳ मै आत्मा उड़ता पंछी बन समीप मिलन मना रही हूँ

→ विश्व की परिक्रमा कर रही हूँ

→ और बेहद की सेवा का अनुभव कर रही हूँ

◆ शक्तिशाली संकल्प

◆ सामर्थ्यशाली संकल्प

◆ बलशाली संकल्प

◆ से मैं आत्मा डाली को छोड़ रही हूँ

➢➢ मै आत्मा उड़ता पंछी हूँ

➳ _ ➳ मै स्वतंत्र आत्मा हूँ

➳ _ ➳ मै समर्थ आत्मा हूँ

➳ _ ➳ मै आत्मा स्मृति - विस्मृति की सीडी चढ़ रही हूँ

→ मै आत्मा जितनी ऊपर जा रही हूँ

◆ उतनी नीचे की बाते मुझ आत्मा से छुट रही हैं

→ मै जितनी समर्थ स्मृति में ऊपर रहती हूँ

◆ उतना व्यर्थ मुझ आत्मा से छूटता जा रहा हैं

→ मै आत्मा जितनी सत्य के साथ हूँ

◆ उतना असत्य मुझ आत्मा से छूटता जा रहा हैं

→ जितना प्रकाश की ओर जाती हूँ

◆ उतना अंधकार मुझ आत्मा से छूटता जाता हैं

➳ _ ➳ मै आत्मा लगाव मुक्त हूँ

→ लगाव मुक्त डाली की अनुभूति

→ मुझ आत्मा को हो रही हैं

◆ मुझ आत्मा की बेचैनी

◆ मुझ आत्मा का समय वेस्ट

◆ वेस्ट होने से बच रहा हैं

➳ _ ➳ मै आत्मा सम्पूर्ण रीति से स्वतंत्र हूँ

→ मै आत्मा सर्व सम्बन्ध

→ से नष्टोमोहा हूँ

→ एक बाप के सिवा

→ मुझ आत्मा का किसी में भी मोह नहीं हैं

◆ मै आत्मा सर्व सम्बंध का अनुभव

◆ एक बाप से ही करती हूँ

➳ _ ➳ मै आत्मा निस्वार्थ भाव से

→ निमित्त भाव से सेव

◆सेवा का प्रत्यक्ष फल

◆ खुशी का अनुभव कर रही हूँ

➢➢ मै स्वराज्य अधिकारी आत्मा हूँ

➳ _ ➳ मैं आत्मा अपनी स्थूल और सूक्ष्म कर्मेन्द्रियों की अधिकारी हूँ

→ उन शक्तियों की मै आत्मा मालिक हूँ

◆ मैं आत्मा मास्टर सर्व शक्तिवान हूँ

➳ _ ➳ मै आत्मा बाप दादा के साथ विश्व की परिक्रमा कर रही हूँ

→ मेरी सदियों की धारणाएँ

→ मेरे सदियों के बंधन

→ मेरी सदियों की मान्यताएं

◆ नये रूप में परिवर्तन हो रही हैं

◆ मै आत्मा मुक्ति के

◆ अनुभव में समा रही हूँ

➳ _ ➳ मै विघ्न विनाशक आत्मा हूँ

➳ _ ➳ मुझ समीप आत्मा के हर संकल्प

➳ _ ➳ और कर्म बाप के समान हैं

→ मै समीप आत्मा सदा विघ्नविनाशक हूँ

◆ मैं आत्मा किसी भी प्रकार के विघ्नों से

◆ वशीभूत नहीं होती हूँ